भागवद गीता

परसतावना

योगेशवर ने युदध कशेतर में अरजुन को जो गयान दीया,
गीता के अुस परम गयान का हमने मन में धयान कीया.

सरववीदीत है की भागवद गीता पर 3000 से अधीक पुसतकें लीखी जा चुकी हैं जीनमें अनेक अनुवाद, टीका, वयाखया आदी सममीलीत हैं. बहुत सी पुसतकें हीनदी भाषा में भी लीखी गअी हैं, फीर अेक और पुसतक हीनदी में लीखने का कया अुददेशय है?

हीनदी भाषा में लीखी पुसतकों में आम तौर से दो कमीयां महसूस की जाती हैं, अेक तो अुनकी हीनदी भाषा अीतनी कठीन होती है की सब लोगों की समझ में नहीं आती. दूसरे, अधीकतर ये पुसतकें गदय के रूप में लीखी गअी हैं जीनको पढ़ा जा सकता है लेकीन गाया नहीं जा सकता. संसकरीत की मूल गीता पदय रूप में है और अुसकी लोकपरीयता का यह अेक मुखय कारण माना जाता है.

अीन दोनों बातों को धयान में रखते हुअे यह सुझाव मीला की यदी भागवद गीता को साधारण लोगों की समझ में आने वाली हीनदी भाषा में पदय रूप में परसतुत कीया जाये तो वह और भी रोचक हो सकती है. अीस सुझाव से हीनदी गीता लीखने की परेरणा मीली.

आम लोगों को हीनदी में लीखी भागवद गीता की पुसतकों में भाषा की कठीनता के अलावा भावों की जटीलता से भी परेशानी होती है. शाबदीक अनुवादों में भाव–परवाह की कमी होना सवाभावीक है. अीसको धयान में रखते हुअे हीनदी गीता में शाबदीक अनुवाद की अपेकशा भाव–परवाह पर अधीक महतव दीया गया है. अीसी दरीषटीकोण से शरी करीषण और अरजुन के गीता में जो अनेक नाम परयुकत हुअे हैं, अुन सबका हीनदी गीता में अुपयोग नहीं कीया गया है.

जहां तक भागवद गीता को गीत रूप में परसतुत करने का परशन है, हीनदी गीता की यह सबसे परमुख वीशेषता है. अीसके छनदों को संगीत–बदध करके सुगमता से गाया जा सकता है. अीससे गीता को याद करने और हीनदी समझने वालों में और अधीक लोकपरीय बनाने में सहायता मीलेगी. सापताहीक पाठ करने वालों की सुवीधा के लीये भागवद गीता को 52 पाठों में वीभाजीत करने का अेक नया ढंग अपनाया गया है.

गीता का सरल हिनदी पदय में यह नया रूप पाठकों के सामने परसतुत है. आशा है असे सफलता मिलेगी.

धनयवाद

वीरेनदर पाल सिंह
रिषीकेश

भागवद गीता का सापताहिक पाठ

सपताह 1 - 1-01 से 1-19 तक
सपताह 2 - 1-20 से 1-27 तक
सपताह 3 - 1-28 से 1-47 तक
सपताह 4 - 2-01 से 2-09 तक
सपताह 5 - 2-10 से 2-30 तक
सपताह 6 - 2-31 से 2-38 तक
सपताह 7 - 2-39 से 2-53 तक
सपताह 8 - 2-54 से 2-72 तक
सपताह 9 - 3-01 से 3-16 तक
सपताह 10 - 3-17 से 3-35 तक
सपताह 11 - 3-36 से 3-43 तक
सपताह 12 - 4-01 से 4-12 तक
सपताह 13 - 4-13 से 4-24 तक
सपताह 14 - 4-25 से 4-32 तक
सपताह 15 - 4-33 से 4-42 तक
सपताह 16 - 5-01 से 5-15 तक
सपताह 17 - 5-16 से 5-29 तक
सपताह 18 - 6-01 से 6-18 तक
सपताह 19 - 6-19 से 6-36 तक
सपताह 20 - 6-37 से 6-47 तक
सपताह 21 - 7-01 से 7-11 तक

सप्ताह 22 - 7-12 से 7-19 तक
सप्ताह 23 - 7-20 से 7-30 तक
सप्ताह 24 - 8-01 से 8-10 तक
सप्ताह 25 - 8-11 से 8-28 तक
सप्ताह 26 - 9-01 से 9-15 तक
सप्ताह 27 - 9-16 से 9-34 तक
सप्ताह 28 - 10-01 से 10-11 तक
सप्ताह 29 - 10-12 से 10-18 तक
सप्ताह 30 - 10-19 से 10-32 तक
सप्ताह 31 - 10-33 से 10-42 तक
सप्ताह 32 - 11-01 से 11-14 तक
सप्ताह 33 - 11-15 से 11-31 तक
सप्ताह 34 - 11-32 से 11-46 तक
सप्ताह 35 - 11-47 से 11-55 तक
सप्ताह 36 - 12-01 से 12-20 तक
सप्ताह 37 - 13-01 से 13-19 तक
सप्ताह 38 - 13-20 से 13-35 तक
सप्ताह 39 - 14-01 से 14-09 तक
सप्ताह 40 - 14-10 से 14-18 तक
सप्ताह 41 - 14-19 से 14-27 तक
सप्ताह 42 - 15-01 से 15-20 तक
सप्ताह 43 - 16-01 से 16-05 तक
सप्ताह 44 - 16-06 से 16-24 तक
सप्ताह 45 - 17-01 से 17-13 तक
सप्ताह 46 - 17-14 से 17-28 तक
सप्ताह 47 - 18-01 से 18-12 तक
सप्ताह 48 - 18-13 से 18-28 तक
सप्ताह 49 - 18-29 से 18-39 तक
सप्ताह 50 - 18-40 से 18-49 तक
सप्ताह 51 - 18-50 से 18-63 तक
सप्ताह 52 - 18-64 से 18-78 तक

0